ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE
24, AKBAR ROAD, NEW DELHI
COMMUNICATION DEPARTMENT

Highlights of Press Briefing **12 March, 2021**

Shri Pawan Khera, Spokesperson, AICC addressed the media at AICC Hdqrs, today.

श्री पवन खेड़ा ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि आज एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दे पर आप सबको तकलीफ दी है। देश की स्थिति आपके सामने है। बेरोजगारी अपने चरम पर है, आज भी कांग्रेस का एक बड़ा प्रदर्शन जंतर-मंतर पर हुआ, हजारों की संख्या में लोग वहाँ पर थे। पेट्रोल, डीजल, एलपीजी इन सब पर हम बार-बार यहाँ आकर आप सबका ध्यान आकर्षित करते रहते हैं। किसानों का जो आंदोलन है, वो 106-7 दिन हो गए हैं, अभी तक वो बरसात में, गर्मी-सर्दी से जूझ रहे हैं। जिस व्यक्ति ने अच्छे दिन का वायदा किया, वो जिन लग्जरी बसों पर, 2014 में पहली बार ऐसा चुनाव देखा, हम सबने, पूरे देश ने देखा, उसमें लग्जरी बसों पर एक व्यक्ति जुमले बांटते हुए पूरे देश में घूम रहे थे। 3D के जुमले थे। अच्छे दिन उनके लिए आए और उन तमाम उद्योगपतियों के लिए आए, जिन्होंने उस वक्त और उसके बाद के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी, नरेन्द्र मोदी जी के चुनावों में पैसे लगाए और फिर उनसे लाभ लिए, उनके भी अच्छे दिन आए।

एक कंपनी है, जिसका नाम है सिद्धिविनायक लॉजिस्टिक लिमिटेड (SVLL), अहमदाबाद, गुजरात की ये कंपनी है, 2002 में बनी थी। ये ट्रांसपोर्ट कंपनी है, सूरत के एक व्यापारी हैं, रुप चंद बैद साहब (Rup Chand Baid), ये उनकी कंपनी है। ऐसी अनेक कंपनियां होती हैं, आप कहेंगे इस पर हम प्रेस वार्ता क्यों कर रहे हैं? कल मेरी एक सहयोगी ने और आपने, सोशल मीडिया में स्कैनिया बस गेट, जो घोटाला है, उसके विषय में आप लोग देख ही रहे हैं, जानकारी मिल रही है। तो जो स्वीडन की स्कैनिया बस मैन्युफैक्चरिंग कंपनी है, उसका भारतीय पार्टनर है, सिद्धिविनायक लॉजिस्टिक लिमिटेड (SVLL).

2014 बड़ा रोचक साल है, हिंदुस्तान के इतिहास में, मोदी जी तो सोचते हैं कि पूरे विश्व के और पूरे ब्रह्मांड के इतिहास में 2014 बड़ा महत्वपूर्ण साल है, लेकिन चलिए अपनी बात हिंदुस्तान पर ही सीमित रखें। 2014 बड़ा महत्वपूर्ण साल है। मोदी जी अपनी 5 स्टार, 7 स्टार बस पर सवार थे, वायदे कर रहे थे और इस कंपनी का ग्राफ भी साथ-साथ 2014 में बढ़ता जा रहा था। वो बसें जिस पर मोदी जी ने पूरे हिंदुस्तान में कैंपेन किया, 3D इफेक्ट लाए, होलोग्राफिक लाए। वो सब

बसें सिद्धिविनायक लॉजिस्टिक लिमिटेड (SVLL) ने बनाई। उसके अंदर बहुत अच्छे टॉयलेट बने हुए थे, पैंट्री बनी हुई थी, छोटा सा किचन जिसे कहते हैं। अल्ट्रा लग्जरियस थी, एलसीडी स्क्रीन थी। आपको तो याद होगा, आपने तो बहुत कवर किए चुनाव। उस चुनाव को कवर करते हुए आपमें से कई लोग भी बड़े भौच्चकें रह गए थे, किस तरह का 7 सितारा चुनाव था वो।

हैड फोन, मोबाईल, लैपटॉप चार्जिंग प्वाइंट, वाई-फाई कनेक्शन और 2-3 दिन में पिछले जो स्कैम निकल कर आया, उसमें ये बड़ा स्पष्ट है कि कैसे एक भारतीय मंत्री को रिश्वत दी गई। भारत में उस स्कैनिया को पैठ बनाने के लिए। प्रधानमंत्री 2014 में सत्ता में आए और SVLL का टर्न ऑवर 1,500 करोड़, 80 प्रतिशत उसी दौरान बढ़ा, 80 प्रतिशत उनका टर्न ऑवर उसी दौरान बढ़ा और जब बैंक उस कंपनी को बार-बार चिट्ठी लिखते थे, याद दिलाते थे कि साहब हमारा पैसा लौटाओ, तो रुप चंद बैद साहब बैंक को लिखते थे कि अभी हम मोदी जी के चुनाव प्रचार में बसें बनाने में व्यस्त हैं। ये उनकी लैंग्वेज, मेरी नहीं है, रुप चंद बैद पत्रों में लिखते थे।

"The undersigned was busy with preparation of very specialized vehicles for 3D campaigning by Hon'ble Shri Narendra Bhai Modi and his team. It took about two months, February and March, during this period I could not attend to business work." ये रुप चंद बैद साहब बैंक वालों को लिख रहे हैं। अपनी मजबूती दिखा रहे हैं, कि पॉलिटिक्ल मेरे कनेक्शन देखिए, मेरे राजनीतिक रसूक़ देखिए। फरवरी, 2015 में एक रिपोर्ट आई, जिसमें यह मालूम पड़ा कि बैंक ऑफ महाराष्ट्र का जो सबसे बड़ा डिफॉल्टर है, बैंक ऑफ महाराष्ट्र पर भी हमने यहाँ से प्रेस वार्ता की है, कई की हैं। सबसे बड़ा डिफॉल्टर बैंक ऑफ महाराष्ट्र का कौन है, SVLL. ये जो व्यस्त थे, मोदी जी के प्रचार में, जिनका 1400 करोड़ टर्न ऑवर हो गया। 80 प्रतिशत टर्न ओवर बढ़ गया। मोदी जी के साथ-साथ इनका भी ग्राफ ऊंचा जाने लगा। वह सबसे बड़े डिफॉल्टर थे, बैंक ऑफ महाराष्ट्र के और बैंक ऑफ महाराष्ट्र, हम सबको याद रखना चाहिए एक ग्रामीण लोगों की इन्वेस्टमेंट को रखता है। ग्रामीण बैंक, छोटे-छोटे जो पैसा जमा करते हैं बैंक में, ये उन लोगों का बैंक है। लेकिन सबसे बड़ा डिफॉल्टर होने के बावजूद ना तो बैंक उसको एनपीए की श्रेणी में डाल रहा था, ना बैंक उसको विलफुल डिफॉल्टर, जो एक श्रेणी होती है, ना उसमें डाल रहा था। क्यों- क्योंकि रसूक़ थे। क्योंकि वो चिट्ठी में भी लिख देते थे कि मैं मोदी जी के काम में व्यस्त हूं, मुझे डिस्टर्ब मत करो और ये पेंशनर का बैंक माना जाता है, जहाँ लोग अपनी पेंशन की राशि रखते हैं, छोटी-छोटी सेविंग रखते हैं।

SVLL का जो हैड क्वार्टर है, वो सूरत में है। इन्होंने 2012 में एक स्कीम शुरु की, 'चालक से मालक'। CSR की स्कीम थी और उसमें भी बैंक ऑफ महाराष्ट्र से उन्होंने भारी ऋण लिया। और

बाद में जब फॉरेंसिक जांच बैंक ने, आंतरिक जांच की, तो मालूम पड़ा कि इसमें भयंकर घपला किया गया। मतलब पूरी तरह से घपला, घोटाला हुआ था, उस स्कीम में भी घोटाला था और आप कहेंगे कि 2012 में तो मोदी जी नहीं थे। तो उनकी इंटर्नल रिपोर्ट ये बोलती है कि जो जोनल ऑफिस था बैंक ऑफ महाराष्ट्र, गुजरात में, वो अपने राजनीतिक रसूक़, जो स्टेट लीडरशिप के साथ राज्य सरकार और राज्य के नेतृत्व के साथ दिखा-दिखा कर अपना काम करवाता था और काम करता था जोनल ऑफिस ने केन्द्रीय कार्यालय से राय नहीं ली, उनसे अनुमति नहीं ली और ये ऋण दे दिया। ये स्पष्ट उनकी आंतरिक रिपोर्ट में मैं दे रहा हूं।

836 करोड़ का लोन बैंक ऑफ महाराष्ट्र ने 'चालक से मालक' स्कीम में रुप चंद बैद जी की कंपनी SVLL को दिया। ये इंटर्नल प्रोब है, जिसकी हमने इसमें चर्चा भी की है।

"The huge exposures taken by the zonal authorities were without express consent by the head office, violating its own credit policy." ये बैंक की अपनी रिपोर्ट है। तो इससे पहले की रविशंकर प्रसाद जी नथूने फैलाते हुए फिर से प्रेस वार्ता कर दें, 2012 में मनमोहन सिंह जी की सरकार थी। मैं पहले ही बता दूं कि रविशंकर प्रसाद जी कुछ और काम कर लेना, आज पीसी मत करिएगा। ये स्पष्ट तौर पर था कि राज्य, जो जोनल और जोनल में कौन था हैड - जोनल में हैड एक श्री पी एन देशपांडे जी (P N Deshpande) थे, जिनके विषय में हमारे नेता दिग्विजय सिंह जी ने अरुण जेटली जी को उस वक्त पत्र भी लिखा था। देशपांडे जी जोनल हैड थे बैंक ऑफ महाराष्ट्र के और देशपांडे जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से बहुत अच्छी तरह से जुडे हुए, उनका जो यूनियन है बैंकों का, उनके ये ऑफिस बैरियर रहे थे, संघ से जुड़े व्यक्ति।

अब कौन प्रोटेक्ट कर रहा था, SVLL को, किसका प्राश्रय था SVLL को, यह सबके सामने है। वो खुद, हमें तो कुछ ढूंढने की भी जरुरत नहीं है। SVLL वाले खुद ही बता देते हैं कि हमारे ये लिंक हैं। प्रधानमंत्री जी ने ड्राइवर्स डे मनाने पर उनको शुभकामनाएं दी। अपनी वेबसाइट पर प्रधानमंत्री जी की फोटो, वो अब हट गई है। हट ही जाती है ऐसे वक्त पर। वेसबाइट पर प्रधानमंत्री जी के साथ फोटो लगाकर, सब कुछ, हमेशा सामने वो मोदी जी को रखते थे।

जो पीएन देशपांडे थे, ये जनरल मैनेजर रिसोर्स प्लानिंग, दिग्विजय सिंह जी के पत्र के बाद, सीबीआई इंक्वायरी के बाद इनको कुछ वक्त के लिए हटा दिया गया, संस्पेंड कर दिया गया, लेकिन फिर से बहाल कर दिया गया। अब इसका उत्तर बैंक के आप वरिष्ठ अधिकारियों से पूछेंगे, अब उनके पास भी नहीं है कि उनको बहाल क्यों किया गया और फिर उनको पेंशनयाफ्ता करके जब उनकी रिटायरमेंट की उम्र आई, उनको रिटायर कर दिया। देशपांडे जी अब, He is living

happily ever after, मोदी जी दूसरे टर्म पर आ गए हैं। बैंक ऑफ महाराष्ट्र की जो हालत है, वो आपके सामने है और अच्छे दिन चल रहे हैं, जिनके चल रहे हैं, आपके सामने हैं।

अब भारतीय मजदूर संघ के इनके रिश्ते पीएन देशपांडे जी के, प्रश्न सबसे बड़ा, मोदी जी से बाद वाला जो दूसरा प्रश्न है, वो ये है। पहला प्रश्न तो मोदी जी के SVLL से रिश्ते कहाँ तक हैं? उन रिश्तों का लाभ है SVLL को, लोन लेते वक्त और लोन ना चुकाने के वक्त, बचने में, कहाँ-कहाँ हुआ? और जिसने लोन दिया, पीएन देशपांडे उनके संघ से रिश्ते, उन रिश्तों का क्या लाभ मिला? ये एक नेक्सेस हैं, जिसमें संघ भी है, जिसमें भाजपा भी है, जिसमें प्रधानमंत्री जी खुद सरेआम शामिल दिख रहे हैं। गड़करी जी का तो आपने कल सुना ही। जो भुगत रहा है, वो है एक छोटा इनवेस्टर। वो है जो अपनी पसीने की, खून-पसीने की गाढ़ी कमाई बैंकों में रखता है। कई उदाहरण हम आपको यहां बैठकर दे चुके हैं कि कैसे एनपीए हुए, कैसे बैंकों ने बड़े-बड़े उद्योगपतियों को लोन दिए, कैसे एनपीए हुए। यहाँ तो एनपीए की श्रेणी में रखने में हाथ कांप रहे थे बैंक के क्योंकि SVLL के रिश्ते इतने प्रगाढ़ थे नरेन्द्र मोदी जी के साथ। यहाँ तो विलफुल डिफॉल्टर कहने में भी थर-थर कांप रहे थे। ये रिश्ते थे उनके।

कांग्रेस पार्टी मांग करती है प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी से कि वो इस कंपनी के साथ अपने रिश्ते पर सफाई दें, जिसने बैंक ऑफ महाराष्ट्र के उपभोक्ताओं की गाढ़ी कमाई पर हाथ साफ कर दिया। जिसने करोडों रुपए का घपला किया। ये वही कंपनी है, जो स्वीडिश कंपनी स्कैनिया की भारत में साझेदार थी और स्कैनिया ने इसी कंपनी के माध्यम से भारत में घूस देने का आरोप लगाया है।

हम मांग करते हैं कि प्रधानमंत्री जी इन आरोपों पर अपनी सफाई दें।

Shri Pawan Khera said- In our country today, the youth are unemployed, the middle class is suffering because of the rising prices of day to day commodities, the farmers are braving the rains, cold and heat sitting at the borders of Delhi; and all of them are just looking for the "*acche din"* that Prime Minister Narendra Modi promised during the 2014 election campaign on board customized luxury buses from Siddhi Vinayak Logistics Limited (SVLL). But seldom did anyone know this "*acche din"* is reserved only for those who have mastered the art of "*jumlebaazi*", and those corporates who fund them during elections.

The company in question Siddhi Vinayak Logistics Limited (SVLL) is a company registered in Ahmedabad, Gujarat in the year 2002. It is a transport company run by Surat based businessman Roop Chand Baid.

SVLL and SCANIA Partnership

In the year 2014, SVLL announced a partnership with International Luxury Bus Manufacturer Scania, to launch services comprising of "in-house

restrooms and pantries, and ultra-luxurious facilities like Personal LCD screen with USB compatibility and Sennheiserheadphones along with Mobile/Laptop charging points and Wi-Fi Connection." And the latest scam is the one confirmed by the CEO of ScaniaHenrikHenriksson, that bribes were paid in order to get contracts for buses in India. The revelation by the CEO of Scania, also brings to the light claims by SVT that an Indian Minister was paid bribes by the company.

SVLL AND PM MODI: The Nexus

The year 2014 was significant for two reasons for SVLL, it saw PM Narendra Modi come to power in the center and it saw their company grow with an annual turnover of Rs. 1500 crores which amounted to an 80% annual growth. One of its greatest achievements was the tie up with the then BJP Prime Ministerial candidate Narendra Modi's campaign to which they were supplying specialized video trucks fitted with 3D projection technology. On one hand while the company was enjoying an increased annual turnover, it was also under immense pressure to service its mounting debts. **Requests to repay the debt were met with a response that the company is busy in helping Candidate Modi with specialized vehicles for the 2014 elections. This was seen as a method to showcase their strong political connections.**

In his letter addressed to Assistant General Manager, Bank of Maharashtra, Deccan Gymkhana Branch, Pune, Mr. wrote,

"Before that undersigned was busy with preparation of very specialised vehicles for 3D campaigning by Hon. Shri. Narendrabhai Modi (Now Hon. Prime Minister of India)*& his team. It took about 2 months* (February & March). *During this period, I couldn't attend business work."*

In a February 2015 report, it was highlighted that SVLL was the Bank of Maharashtra's largest defaulter. **Despite being a defaulter, the fact that the company had friends at the highest echelons of power, meant that neither were the loan accounts tagged as NPA's nor were they classified as wilful defaulters.**

But what is extremely critical to note here is that Bank of Maharashtra is primarily a rural bank wherein more than half of its depositors are farmers and pensioners from Rural Maharashtra.

Why did SVLL take such huge loans?

SVLL headquartered in Surat, as a part of its Corporate Social Responsibility started the "chalak se malak" schemein 2012. As a part of this scheme, it took loans from the Bank of Maharashtra with the claim that they intended to

promote the welfare and reward the loyalty of hundreds of truck drivers employed with them.

The proposal was that SVLL would sell its used trucks to the drivers at a mutually agreed fair price. The drivers would then operate the trucks as their own and have them deployed with SVLL as sub-contractors. SVLL got Bank of Maharashtra to fund these purchases and promised to pay the installments, which never happened.

Subsequently, bank had direct exposure to the group companies of SVLL of Rs 259 crore, and its indirect exposure to the group by way of Small Road Transport Operator finances were Rs 645 crore.

Majority of the loans taken by SVLL were given by the Ahmedabad and Surat branches of the Bank of Maharashtra. This loan fraud at that point in time amounted to a whopping Rs. 836 crores.

An internal probe by the Bank of Maharashtra made this observation, "*The huge exposure taken by the zonal authorities were without express consent by Head Office, violating its own credit policy about the exposure to the group defined under credit policy approved by the board. In fact, the finance were made without considering the basic principles of lending, flouting RBI guidelines and credit policy of the bank.*

Who is protecting SVLL?

Two principles pieces of evidence show the nexus between the PM Modi and SVLL. The first is the letter written on June 11, 2014 by Rup ChandBaid to the Assistant General Manager of Bank of Maharashtra, Deccan Gymkhana Branch claiming that he has been busy "with preparation of very specialised vehicles for 3D campaigning by Hon. Shri. Narendrabhai Modi (now Hon. Prime Minister of India) & his team."

Yet again, in a letter dated September 16, 2014, Rup ChandBaid showed his proximity to the Prime Minister by forwarding the copy of a letter his company received from PM Modi congratulating his company on the observance of "Drivers Day".

The Company's website also used to have a photograph of Mr. Rup ChandBaid and Prime Minister Modi which has been taken down since the company's website until it was taken over and all content has been replaced by a liquidation notice as prescribed by the NCLT in its order on November 19, 2018.

The central element of this entire fraud is P N Deshpande, General Manager, Resource Planning, Government Business, Marketing & Publicity, Bank of Maharashtra and Mr. Rup Chand Baid. A complaint against Mr. Deshpande was filed with the CVC KV Chowdhary in February 2016. Subsequently the CBI also filed an FIR in this relation.

Senior Congress leader Digvijaya Singh has in April 2016 apprised the then finance minister Arun Jaitleyji about the mis-happenings and the relationship between SVLL Promoter MrBaid and PM Modi. That letter had also highlighted the links P N Deshpande had to the Sangh Parivar through the National Organisation of Bank Officers, an affiliate of the Bharatiya Mazdoor Sangh – the RashtriyaSwayamsevak Sangh-affiliated trade union.

This makes one hypothesis very clear, the nexus of persons involved in defrauding Bank of Maharashtra and its depositors are very closely linked not just to the ruling party but to the Prime Minister of India himself.

In February 2019, Mr. Deshpande superannuated and has been living happily ever after; Prime Minister Modi won another five year mandate to attempt to cover up his deeds; Rup Chand Baid had a fresh CBI case filed against him in October 2020, the details of which remain unknown.

Sd/-
(Dr. Vineet Punia)
Secretary
Communication Deptt,
AICC